एक परिचय

इफिसियों की पत्री को पढ़ना आज की कलीसिया के लिए बहुत ही आवश्यक है। इसे पढ़ने से हमें पता चलता है कि कलीसिया की प्रकृति तथा मसीह में बुलाहट की विलक्षणता के महत्व को समझने से हमारी पहचान छिपती जा रही है। आज कलीसिया के सदस्य प्राय: कलीसिया को अधिक महत्व नहीं देते हैं। आंकड़ों से पता चलता है कि 81 प्रतिशत अमेरिकी लोगों का मानना है कि वे किसी प्रकार की कलीसिया से जुड़े बिना अपने धार्मिक विचार बना सकते हैं।[1] उनके जीवन में कलीसिया का कोई महत्व नहीं है और इस विचार में उन्हें कोई बुराई भी नहीं लगती। धीरे-धीरे यह विचार बहुत से मसीही लोगों में समा गया है, जिस कारण वे प्रभु की कलीसिया को कम महत्व देने लगे हैं।

इफिसियों की पत्री पर ध्यान देने का एक और कारण यह है कि प्रभु की कलीसिया की बहुत सी मण्डलियां सैकुलर हो गई हैं। लगता है जैसे कलीसिया के लिए परमेश्वर का दृष्टिकोण गायब हो गया है। कुछ लोग कलीसिया के लिए परमेश्वर की इच्छा को बाइबल में से खोजने के बजाय, कलीसिया को अपनी इच्छा के अनुसार ढालने का प्रयास करते हैं। इसका ध्यान भौतिकवादी समाज की बढ़ती हुई ''आवश्यकताओं'' तथा ''रुचियों'' की ओर लग गया है। विडज़्बना यह है कि मण्डलियां मसीही लोगों को आकर्षित करने के लिए बाज़ार सर्वेक्षण व अपनी आवश्यकताओं का मूल्यांकन और विकास के कार्यक्रम बनाती तो हैं फिर भी लोग अपनी प्राथमिकताओं की सूची में कलीसिया को वह महत्व नहीं देते।

निश्चय ही, कलीसिया के महत्व तथा उसके लिए अपने प्रेम को हर मसीही ने नहीं त्यागा है। प्रभु की कलीसिया की सब मण्डलियों ने अपने आप को सैकुलर सोच के अनुसार नहीं ढाला है। हर कलीसिया ने तो अपनी पहचान नहीं खोई है, परन्तु हर मसीही और हर मण्डली के अपने लोगों और परमेश्वर की इच्छा से दूर जाने का खतरा बना रहता है। इफिसियों की पत्री हमें याद दिलाती है कि कलीसिया अर्थात चर्च वे *लोग* हैं जिन्हें छुड़ाया गया है। कलीसिया परमेश्वर की नई सृष्टि है। इफिसियों की पत्री इस महिमा की पुष्टि करती है। इस अद्‌भुत नई सृष्टि के रूप में कलीसिया की प्रकृति का पौलुस द्वारा दिया गया चित्रण शामिल है। वह मसीही लोगों से नई सृष्टि बनकर जिसे परमेश्वर मसीह के द्वारा अस्तित्व में लाया है रहने को कह रहा था।

नये नियम की किसी पत्री को पढ़ते समय पांच आधारभूत प्रश्नों का उज़र देना आवश्यक होता है: (1) यह पत्री किसने लिखी? (2) किसके नाम लिखी गई? (3) कब लिखी गई? (4) ज़्यों लिखी गई? और (5) इसका मूल संदेश ज़्या है? इफिसियों की पत्री का अध्ययन आरज़्भ करने और यह देखने से पहले कि परमेश्वर नये मनुष्यत्व या सृष्टि के

लिए ज़्या कहता है, हमें चाहिए कि इन प्रश्नों का उज़र देने के लिए कुछ समय दें।

इसका लेखक

इफिसियों की पत्री की पहली ही आयत में इसके लेखक का पता चलता है: ''पौलुस की ओर से जो परमेश्वर की इच्छा से यीशु मसीह का प्रेरित है, उन पवित्र और मसीह यीशु में विश्वासी लोगों के नाम जो इफिसुस में हैं। हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुज़्हें अनुग्रह और शांति मिलती रहे'' (1:1, 2)। पहली सदी में लेखकों द्वारा अपना परिचय देते हुए लिखना आरज़्ज़ करना सामान्य बात थी। पौलुस ने भी उसी नमूने को ध्यान में रखा।

पौलुस ने यीशु द्वारा बारह चेलों को दिए गए अपने पद का दावा भी किया था (लूका 6:12, 13)। वह एक ''प्रेरित'' (यू.: *apostolos*) संदेश पहुंचाने वाला अर्थात विशेष रूप से चुना हुआ या भेजा गया एक आधिकारिक व्यज़्ति था। पौलुस ने जो कुछ भी लिखा वह किसी के अधिकार से लिखा अर्थात ये पौलुस के अपने विचार, सोच या सुझाव नहीं थे। उसका संदेश उसका अपना नहीं था; बल्कि पौलुस का संदेश उसे यीशु मसीह से मिला था। उसके लेखों को ऐसे मानना चाहिए जैसे प्रभु यीशु मसीह की बातें और आज्ञाएं हों।

पौलुस अपने पाठकों को बताता है कि वह अपने आप प्रेरित होना उसकी इच्छा के अनुसार नहीं बना था। इस पद के लिए उसने आवेदन नहीं किया था। न किसी कलीसिया ने उसे प्रेरित नियुज़्त किया था। बल्कि वह उस सबसे ऊंचे अधिकार अर्थात परमेश्वर पिता की इच्छा से दी गई यीशु मसीह की आज्ञा से प्रेरित बना था।

इफिसियों की पत्री पढ़ते हुए, हमें चाहिए कि अपने आप को पवित्र भूमि पर खड़े देखें। हम जो बातें इसमें पढ़ते हैं, वे किसी मनुष्य की बातें नहीं हैं। ये परमेश्वर के वचन हैं। परमेश्वर पौलुस प्रेरित द्वारा लिखी हुई बातों से हमसे बात करता है।

इसके प्राप्त कर्ज़ा

यह पुस्तक ''उन पवित्र और मसीह यीशु में विश्वासी लोगों के नाम'' लिखी गई ''जो इफिसुस में हैं।'' ध्यान दें कि पौलुस अपने पाठकों के लिए ज़्या कहना चाहता था।

पहली बात यह कि वे ''पवित्र लोग'' (यू.: *hagios*) थे। ये शज़्द मसीही लोगों के किसी विशेष वर्ग के लिए जो दूसरे लोगों से ऊपर हों, नहीं हैं। जैसे कई लोग मृतकों को सेंट या संत का दर्जा देते हैं। पवित्र लोग अर्थात सेंट मसीही लोगों में से चुने गए उन लोगों को नहीं कहा जाता जो दूसरे लोगों से किसी प्रकार पवित्रताई में अधिक हों। ''पवित्र लोग'' या ''सेंट'' तो हर मसीही को कहा गया है। परमेश्वर का हर बालक इस अर्थ में पवित्र अर्थात सेंट या पवित्र जन है कि उसे परमेश्वर से मिलने के लिए अलग किया गया है। यह शज़्द पहले इस्राएल जाति के लिए ही इस्तेमाल होता था। इस्राएल को ''पवित्र प्रजा'' कहा जाता था। अब यह शज़्द उन सब लोगों के लिए है, जिन्होंने मसीह के द्वारा परमेश्वर से अपना सज़्बन्ध बना लिया है। मसीह में परमेश्वर की नई मनुष्यता या सृष्टि अब परमेश्वर का

इस्राएल है (गलतियों 6:16)।

दूसरा, वे ''विश्वासी'' (यू.: *pistos*) थे। अन्य शब्दों में पौलुस अपने पाठकों को वे लोग मानता था जिन्होंने प्रभु यीशु मसीह पर भरोसा रखा था। अविश्वासियों के विपरीत, वे मसीह में विश्वास करने वाले लोग थे।

तीसरा, वे ''मसीह यीशु में'' थे। इफिसियों की पत्री में यह प्रमुख वाक्यांश पहली आयत में मिलता है। परमेश्वर का नया मनुष्यत्व अस्तित्व में है और वह ''मसीह में'' है। ''मसीह में'' होने का अर्थ उससे उसी प्रकार जुड़ना है जैसे दाखलता के साथ शाखाएं हों या देह के साथ अंग। मसीही लोग मसीह में अपना भरोसा रखते हैं और वैसा ही जीवन बिताने की कोशिश करते हैं जिससे पता चले कि उनका भरोसा उसमें है।

अन्त में, इस पत्री के प्राप्तकर्ज़ा ''इफिसुस के'' लोग थे। इफिसुस एशिया के रोमी साम्राज्य की राजधानी थी जो बहुत बड़ी, व्यस्त, व्यापारिक बन्दरगाह थी। यह मूर्ति पूजकों की देवी अरतिमुस का मुख्य पूजास्थल भी था। अरतिमुस का मन्दिर आज भी दुनिया के सात अजूबों में से एक माना जाता है।

पहले, दूसरी मिशनरी यात्रा के दौरान पौलुस यहां थोड़ी देर के लिए आया था (प्रेरितों 18:18-21)। बाद में तीसरी मिशनरी यात्रा के दौरान वह यहां दो से अधिक वर्ष तक रहा था। तीन महीने तक आराधनालय में शिक्षा देने के बाद, उसे कहीं और भेज दिया गया और वह तुरन्नुस की पाठशाला में सिखाने लगा (प्रेरितों 19:8, 9) था। पौलुस अपना निर्वाह तज़्बू बनाकर करता था। उसके संदेश की खबर पूरे क्षेत्र में फैल गई (प्रेरितों 19:10)। कई आश्चर्यकर्म हुए। लोग अपने रुमाल और वस्त्र पौलुस से छुआकर रोगों से चंगे हो जाते थे (प्रेरितों 19:11, 12)। यीशु के नाम में दुष्टात्माएं निकाली गईं, यहां तक कि यहूदी तान्त्रिकों ने भी विश्वास किया (प्रेरितों 19:13-16)। मूर्तिपूजकों में से मन परिवर्तन करने वालों ने अपने बुरे कामों को त्यागकर अपनी पोथियां आदि जला दीं (प्रेरितों 19:18-20)। अन्ततः देमेत्रियुस नामक एक सुनार द्वारा पौलुस की सफलता को नगर के व्यवसाय के लिए खतरा बताने का आरोप लगाने पर दंगा भड़क गया। पौलुस के प्रचार से अरतिमुस देवी की चांदी की मूर्तियां बनाने वालों का कारोबार ठप्प हो गया था (प्रेरितों 19:23-41)। इसलिए पौलुस को वहां से जाना पड़ा, परन्तु तब तक कलीसिया वहां मज़बूत हो चुकी थी।

पौलुस फिर कभी इफिसुस में नहीं गया, परन्तु यरूशलेम से वापस आते समय वह मिलेतुस की बन्दरगाह के निकट इफिसुस के ऐल्डरों से अवश्य मिला था। उसने उन्हें एक बहुत ही भावपूर्ण विदाई संदेश दिया (प्रेरितों 20:13-38)।

यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि प्रारम्भिक पुरालेखों में ''इफिसुस में'' नहीं मिलता। कुछ लोगों का सुझाव है कि इसे केवल इफिसुस के लिए ही नहीं बल्कि एशिया माइनर की *सब* कलीसियाओं के लिए एक सर्कुलर लैटर या परिपत्र माना जाए। इफिसियों की पुस्तक में विशेष लोगों के नाम अभिवादन भी नहीं मिलता, जिनसे इफिसुस में रहते समय पौलुस मिला होगा। पुस्तक में सामान्य अनुभवों का कोई उल्लेख नहीं है। इस पत्री में पौलुस की कुछ अन्य पत्रियों में मिलने वाले व्यक्तिगत हवाले नहीं मिलते हैं। इससे इस विचार को बल

मिल सकता है कि इफिसियों की पत्री एक सर्कुलर लैटर थी। परन्तु इसके प्राप्तकर्ज़ा के वास्तविक भौगोलिक नाम से इसका मूल संदेश बदल नहीं जाता। यह पत्री हर जगह और हर युग की कलीसिया के लिए संदेश है।

इसका समय

तीन बार इस पत्री में पौलुस ने लिखा है कि वह एक कैदी के रूप में लिख रहा है (3:1; 4:1; 6:20)। काफी समय तक इसे जेल की चार पत्रियों अर्थात प्रिज़न लैटर्स (इफिसियों, फिलिप्पियों, कुलुस्सियों और फिलेमोन) में से एक माना जाता रहा है। यह मानने का एक अच्छा कारण है कि यह विशेष बन्दी गृह रोम में ही पड़ता था (60-62 ईस्वी)। पौलुस ने रोम में कैद में दो वर्ष बिताए थे (प्रेरितों 28:16-31)। इसके अलावा, प्रारम्भिक कलीसिया से अठारहवीं सदी की कलीसिया की परम्परा तक रोम को ही जेल से लिखी गई पत्रियों का मूल स्थान माना जाता रहा है।

इपफ्रास पौलुस से मिलने के लिए आया और उसने पौलुस प्रेरित को कुलुस्सै की कलीसिया की कुछ परेशान करने वाली बातें बताईं। स्पष्टतया झूठी शिक्षा से उस कलीसिया का नाश हो रहा था, जिस कारण पौलुस ने कुलुस्सियों के नाम एक पत्री लिखी। उसने उस मण्डली के फिलेमोन नामक एक सदस्य को व्यक्तिगत पत्र भी लिखा। उस पत्र में उन्नेसिमुस नाम के एक दास की ओर ध्यान दिलाया गया था, जिसने सुसमाचार को मान लिया था और उसे अपने स्वामी फिलेमोन के पास वापस भेज दिया गया था। इफिसियों की पत्री भी उसी दौरान लिखी गई थी, इफिसुस की कलीसिया के नाम या एशिया के रोमी साम्राज्य में पड़ोसी कलीसिया के नाम, ये तीनों पत्रियां तुखिकुस, पौलुस के "प्रिय भाई और प्रभु में विश्वासयोग्य सेवक" (6:21) के द्वारा पहुंचाई गई थीं। फिलिप्पियों की पत्री भी स्पष्टतया किसी अन्य अवसर पर इसी रोमी कारावास में लिखी गई थी।

इसका उद्देश्य

इफिसियों की पत्री को पढ़ने पर, हम दो बड़े उद्देश्यों के बारे में सोच सकते हैं। पहला, पौलुस परमेश्वर के नये मनुष्यत्व अर्थात कलीसिया के मूल यहूदियों और अन्यजातियों में से उद्धार पाने वालों से इसके बनने और इसके अनन्त उद्देश्य या सनातन मंशा को दिखाकर कलीसिया की प्रकृति के बारे में समझाना चाहता है (अध्याय 1-3)। दूसरा, परमेश्वर की नई मनुष्यता को पौलुस ने उचित आचरण करने के लिए आवश्यक माना (अध्याय 4-6)। सही व्यवहार के लिए मसीह की देह में एकता पर सबसे अधिक ज़ोर देते हुए (4:1-16), दैनिक जीवन में भक्ति का गंभीरतापूर्वक पीछा करना (4:17-6:9) और मार्ग में चौकसी से शैतान के विरोध की आशा करना शामिल है (6:10-20)।

संदेश

इफिसियों की पुस्तक का मुज़्य विषय इन आयतों में मिलता है:

> ... कि दोनों से अपने में एक नया मनुष्य उत्पन्न करके मेल करा दे। और क्रूस पर बैर को नाश करके इस के द्वारा दोनों को एक देह बनाकर परमेश्वर से मिलाए। ... ताकि अब कलीसिया के द्वारा, परमेश्वर का नाना प्रकार का ज्ञान, उन प्रधानों और अधिकारियों पर स्वर्गीय स्थानों में है, प्रगट किया जाए। उस सनातन मंशा के अनुसार, जो उस ने हमारे प्रभु मसीह यीशु में की थी। (2:15ख, 16; 3:10, 11)।

इसका प्रमुख संदेश पुराने मनुष्यत्व के बीच में परमेश्वर के नये मनुष्यत्व को बनाने के लिए यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के उद्धार करने के कार्य पर केन्द्रित है। पत्री में, ''मसीही शिक्षा तथा मसीही दायित्व, मसीही विश्वास व मसीही जीवन, परमेश्वर ने मसीह के द्वारा ज़्या किया है और हमें ज़्या बनना और ज़्या करना चाहिए'' को जोड़ता है।[2]

सारांश

विचार करें कि इफिसियों की पत्री का अध्ययन मसीही लोगों व प्रभु की कलीसिया की मण्डलियों के लिए कितना महत्वपूर्ण हो सकता है। यह पुस्तक कलीसिया अर्थात परमेश्वर के नये मनुष्य के स्वभाव और महत्व को समझाने के लिए आज भी उज़म है। इफिसियों की पत्री का अध्ययन तीन प्रकार से किया जा सकता है:

कई लोग इफिसियों की पत्री को आज से बहुत समय पहले रहने वाले लोगों के नाम एक पत्र की तरह पढ़ते हैं जिस कारण, उस संदेश से जो इसमें आज के मसीही लोगों के लिए है, चूक जाते हैं। इससे इफिसियों की पत्री का अध्ययन केवल एक प्राचीन दस्तावेज़ का अध्ययन मात्र रह जाता है, जिसकी वर्तमान में कोई प्रासंगिकता न हो। यदि इसका अध्ययन ऐसे किया जाता है, तो इसके संदेश को गंभीरतापूर्वक न लेकर इससे ऊब भी सकते हैं।

अन्य लोग इफिसियों की पत्री को एक डॉज़्ट्रिन के कोर्स के रूप में पढ़ते हैं जिस कारण वे आधुनिक मसीहियत के लिए इसके आधे संदेश को नहीं समझ पाते। इफिसियों की पत्री में शिक्षा या डॉज़्ट्रिन की बहुत सी बातें हैं। इसमें कलीसिया से सज़्बन्धित आधारभूत थियोलॉजी और उद्धार के लिए परमेश्वर की योजना के बारे में बताया गया है। यदि हम इफिसियों की पुस्तक को केवल डॉज़्ट्रिन की पुस्तक के रूप में पढ़ें और व्यावहारिक प्रासंगिकताओं को नज़रअन्दाज कर दें तो हमें केवल इसका अधूरा संदेश ही मिलेगा। इस ढंग से हम पुस्तक के एक बहुत बड़े लक्ष्य से अर्थात ऐसे लोगों के रूप में जो परमेश्वर के नए मनुष्यत्व में भागीदार बनने के लिए आए हैं, अपने जीवनों को बदलने वाले नहीं बन पाएंगे।

हमें चाहिए कि हम इफिसियों की पत्री को परमेश्वर की ओर से दिए संदेश जानकर

पढ़ें।

पुस्तक को पढ़ने के लिए हमारे लिए परमेश्वर की इच्छा यही है। यह परमेश्वर का वचन है। यदि हम इसे ऐसे पढ़ते हैं, तो हम बदले हुए लोग बन जाएंगे। यही परमेश्वर भी चाहता है। मेरी प्रार्थना है कि आप भी बदले हुए नए लोग बन जाएं। इस अद्‌भुत पुस्तक का सफ़र आरज़्भ करते हुए परमेश्वर आपको आशीष दे!

टिप्पणियां

[1]रॉबर्ट बेलाह, *हैबिट्स ऑफ़ द हार्ट* (न्यू यॉर्क: हार्पर एण्ड रोअ, 1985), 221. [2]जॉन आर. डज़्ल्यू. स्टॉट, *द मैसेज ऑफ़ इफिसियन्स: गॉड'स न्यू सोसाइटी,* द बाइबल स्पीज़्स टुडे, सामा. संस्क. जॉन आर. डज़्ल्यू. स्टॉट (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1979), 25.